विचार बिन्दु

स्वयं प्रकाशित दीप को भी प्रकाश के लिए तेल और बत्ती का जतन करना पड़ता है, बुद्धिमान भी अपने विकास के लिए निरंतर यत्न करते हैं। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता, केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है। –शुक्रनीति

संबंधों की हत्या- तीव्र सामाजिक प्रदूषण एवं पतन कैसे रुके

आये दिन मीडिया में चोरी, डकैती, अपहरण, बलात्कार और हत्या के समाचार पढ़ कर मन बोझिल होता है। अभूतपूर्व रूप से विकसित इलेक्ट्रोनिक व प्रिंट मीडिया द्वारा द्रुतगति से प्रचार-प्रसार कर देना भी एक कारण है। अपराध पहले भी थे, परंतु उनकी जघन्यता एवं वीभत्सता इतनी सामान्यतः कभी नहीं थी। समय-समय पर कई देशों में कुख्यात डाकुओं की चर्चा रही है। पर कई कुख्यात दस्यु अपनी ईमानदारी, आदर्शों व सिद्धांतों के लिये विख्यात भी रहे हैं। लेडी रोबिनहुड, ठाकुर मानसिंह, फूलनदेवी व सुल्ताना डाकू आदि के नाम इतिहास की तरह चर्चित रहे हैं। लगभग सभी पर फिल्म भी बनी हैं। इन लोगों को डाकू के बजाय जनता बागी कहती रही है, याने विद्रोही। इनमें से अधिकांश ने समाज के अत्याचारों व शोषण के खिलाफ विद्रोह किया। इन लोगों का उस जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के लोगों से ही अधिक वैर था जिन्होंने उन पर अत्याचार किया। कुछ ने औरतों पर कभी हाथ नहीं डाला। इसके विपरीत उन्होंने कई दीन-दुखियों व गरीबों की मदद की। यह सभी कुछ उनका प्रशस्ति गान नहीं है। वे अपराधी थे और अपराधी माने जायेंगे। इनमें से कई ज़मीन के झगड़ों से डाकू बने। और इन झगड़ों में अदालत का खर्च न उठाने के कारण बंदूक थाम ली। चंबल घाटी के कई डाकू इसी तरह बने। परन्तु आज कारण बदल गये हैं और तौर-तरीके भी।

आज लाखों-करोड़ों के घोटाले सफेदपोश तथा कथित सभ्य व संभ्रांत कहे जाने वाले व उच्च वर्ग के लोग हैं। ये उन डाकुओं से भी गये-गुज़रे हैं। क्योंकि इनका कोई आदर्श व सिद्धांत नहीं है और विशुद्ध स्वार्थ, केवल धन लिप्सा ही इनका ध्येय है। जनता का धन लूटते हैं, हर गलत कार्य करते हैं। जमीनों पर अतिक्रमण करते हैं, ज़हरीली शराब बनाते हैं। ये खाद्य पदार्थों में भी हानिकारक मिलावट करते हैं। कोई आतंकवाद फैलाता है या आतंकियों के माध्यम से हत्या करवाता है। गलत अफवाहें फैलाना और दंगे फ़साद, लड़ाई-झगड़ा तोड़-फोड़, हिंसा और लूटपाट कराना इनका काम है। ये उन डाकुओं से भी बदतर हैं।

दो दशाब्दियों पूर्व कुत्सित व घृणित अपराधों की संख्या कम थी। भोगवाद की संस्कृति पनपने के साथ सबसे ज्यादा अत्याचार महिलाओं पर होने लगे। हिंदू सनातन धर्म में स्त्री पूज्या थी। वह पुरुष पर आर्थिक दृष्टि से आश्रित थी, परंतु निर्धनतम परिवारों में भी उसका सम्मान व उसका महत्वपूर्ण स्थान था। वह गृहलक्ष्मी तो थी ही, कई बार पुरुष को आर्थिक सम्बल भी खूब देती थी। अपहरण भी था, कभी-कभी बलात्कार व घरेलू हिंसा का भी वह शिकार होती थीं। परंतु संबंधों की पवित्रता व प्रगाढ़ता तथा संयुक्त परिवार की परम्परा के कारण संबंधों की हत्या की शिकार वह इतनी नहीं थी, जितनी आज है।

संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है, इसके कई कारण हैं। पहले अधिकांश आबादी कृषि पर आधारित थी जो संयुक्त परिवार की धुरी थी। औद्योगीकरण के दौर में और प्रमुख रूप से शहरीकरण के कारण भी परिवार बिखरने लगे। उधर शिक्षा में सुधार न होने के कारण श्रम की निष्ठा व अन्य नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ। दूसरी और संचार क्रांति तथा आवागमन के साधनों में जल, थल, नभ में तीव्र गति से यंत्र चालित वाहनों के कारण भी बहुत परिवर्तन आया। सबसे अधिक परिवर्तन संचार तकनीक से हुआ। संचार व वाहन क्रांति ने दुनिया ही बदल दी। बढ़ती आबादी ने परिवार नियोजन की अवधारणा को जन्म दिया।

केन्द्र व राज्य सरकारें ज़बरन धर्म परिवर्तन पर अंकुश लगावें। पढ़े-लिखे लोग भी एक संतान अथवा निःसंतान की धारणा से बचें, संयुक्त परिवार के महत्व को समझें और संयुक्त न भी रह सकते हैं तो अपने बच्चों को सामाजिक निवेश और संबंधों की पवित्रता पर मार्ग निर्देशन दें।

हम दो, हमारे दो और अब हमारा एक अथवा एक भी नहीं का प्रचलन विशेष रूप से शिक्षित समाज में आया और जो संयुक्त परिवार पहले ही टूट रहे थे उनमें संबंधों का ज्ञान, उनका सान्निध्य, उनकी मधुरता और उनकी उपयोगिता विस्मृत होती गई। निश्चय ही संबंधों की पवित्रता भी क्षीण होने लगी। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते भी कलंकित होने लगे। यह भी सुनने में आया कि सगे भाई-बहन विवाह बंधन में बँधे। गर्लफ्रेण्ड, बोय फ्रेन्ड (महिला मित्र और पुरुष मित्र) की अनैतिक परम्परा खूब पनपने लगी। इनकी मर्यादा का अतिक्रमण होकर शारीरिक संबंध तथाकथित प्रगतिशील समाज में आम बात हो गई। इसे आधुनिकता माना जाने लगा। माता-पिता की व्यस्तता, उनकी लापरवाही तथा घर और बाहर संस्कार न मिलने के कारण लिव इन रिलेशनशिप (बिना विवाह साथ रहना) भी प्रचलित हुई। ड्रग्स व अन्य मादक पदार्थों की तस्करी, बिक्री आदि पर पूर्ण नियंत्रण के अभाव व सरकारों की अकर्मण्यता और समाज के भ्रष्टाचार ने भी संबंधों की हत्या को बढ़ावा दिया।

प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या, अवैध संबंधों के कारण, व मादक पदार्थों के सेवन से पति-पत्नी की हत्या, तलाक, आदि बहुत बढ़ने लगे। निश्चय ही परिवार के सम्पदा के झगड़ों ने भी संबंधों की हत्या में योगदान किया। भावना से भगवान है और उसी भावना से संबंध भी बनते बिगड़ते हैं।

हमारे देश में स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता से जोड़ दिया गया है। उद्दंडता, उच्छृंखलता, और अनुशासन हीनता प्रत्येक स्तर पर स्थापित हो गई है। अनुशासन हीनता और नियम तोड़ना हमारी प्रकृति बन गई है। संबंधों की हत्या में कहीं न कही ये सभी सहायक हैं। इसके अतिरिक्त समुदायों में व्याप्त एक-दूसरे के प्रति घृणा भी घनीभूत हो रही है। एक ही समुदाय में संबंधों की हत्या के साथ दो समुदायों के लोगों द्वारा प्रेमी-प्रेमिका बनकर, पति-पत्नी बनकर अत्याचार एवं जघन्य व लोमहर्षक हत्याओं का प्रमुख कारण कहीं न कहीं धोखा देने व घृणा की भावना से संबंधित है। लगता है जैसे यह एक सोची-समझी साजिश है। यूं तो परिवार के प्रत्येक संबंध की हत्या के उदाहरण हैं परंतु मुख्यतः पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के प्रसंग हैं। जिसे हम प्रेम कहते है, वह अधिकांशतः मात्र लैंगिक आकर्षण व शारीरिक सुख की इच्छा होती है। उसमें भावना की दृष्टि से समर्पण व त्याग की भावना नहीं होती। एक-दूसरे की सेवा तो दूर-दूर तक नहीं। हमारी शिक्षा ज्ञान प्रधान मात्र है और वह ज्ञान भी अधूरा। उसमें कर्म व भावना आवश्यक है। परंतु वह श्रम की निष्ठा के बजाय मात्र कमाना, और वह भी बिना श्रम किये, सिखाती है। भावना का सीधा संबंध नैतिक मूल्यों से है जो शिक्षा से पूर्णतः दूर है। प्रत्येक स्तर पर शिक्षा का स्वरूप बदल कर, हम इन हत्याओं को रोक सकते हैं। शिक्षकों व अभिभावकों को अधिकाधिक जागरूक होना होगा तथा विशेषतः प्रेम प्रसंगों में अधिक जागरूक होकर सावधानी बरतें यह आवश्यक है। प्रेम विवाह अथवा पारंपरिक अरेन्ज्ड विवाह की सफलता सेवा, प्रेम, त्याग तथा समर्पण के आधार पर निर्भर करती है। कहावत है– **'पानी पीजिये छानकर और मित्र बनायें जानकर'।** अतः महिला और पुरुष मित्र बनायें तो अच्छी तरह जान कर, समझ कर। परिणामों को देखते हुए अंतः समुदाय (हिंदू-मुस्लिम) विवाह से बचें। केन्द्र व राज्य सरकारें ज़बरन धर्म परिवर्तन पर अंकुश लगावें। पढ़े-लिखे लोग भी एक संतान अथवा निःसंतान की धारणा से बचें, संयुक्त परिवार के महत्व को समझें और संयुक्त न भी रह सकते हैं तो अपने बच्चों को सामाजिक निवेश और संबंधों की पवित्रता पर मार्ग निर्देशन दें।

कहीं पत्नी के, कहीं ताई के और कहीं प्रेमिका के दस, पैंतीस या, अधिक टुकड़े कर के रसोई के कचरे की तरह जंगल-तालाब में फेंकने के समाचार हृदय विदारक हैं। उन्हें फ्रिज में रखकर सहेजने व सुरक्षित रख के अपराध छिपाने के प्रयास किये जा रहे हैं। असहनीय है यह क्रूरता व नृशंस दानवता का यह कृत्य। क्या जनता, प्रशासन, सरकारें एवं न्यायपालिका इसके प्रति गंभीर है। अपराधी को दण्ड हेतु वर्षों-चलती प्रक्रिया से तो गंभीरता लगती नहीं और इसी कारण ऐसे कृत्यों में वृद्धि हो रही है। सभी पक्षों को सोचना है, जागना है, सतर्क और जागरूक होकर अपना-अपना कर्तव्य तीव्र गति से करना है, जिससे यह पाशविक प्रवृत्ति रोकी जाकर नेस्तनाबूद की जा सके। समाज के इस घोर प्रदूषण एवं पतन को रोकना ही होगा अन्यथा हमारे समस्त पारिवारिक संबंध ही नहीं, संपूर्ण मानवीयता का अस्तित्व ही समाप्त हो जायगा।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

(29 दिसंबर- गुरु गोविंद सिंह जयंती विशेष)

वीरता, साहस, शौर्य एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति गुरु गोविंद सिंह

पन्नालाल मेघवाल

- **गुरु गोविंद सिंह के दो पुत्रों बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहन्द के नवाब ने जिंदा दीवारों में चुनवा दिया था**

सिखों के आध्यात्मिक गुरु गोविंद सिंह का जन्म पौष माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को हुआ था। आज गुरु गोविंद सिंह की जयंती है। आज देश में जगह-जगह खालसा पंथ की झांकियां निकाली जाती हैं। इस दिन खासतौर पर लंगर का आयोजन किया जाता है। आज के दिन पटना साहिब गुरुद्वारे में संगतों की भारी भीड़ उमड़ती है। गुरु गोविंद सिंह के जन्मोत्सव को सिख धर्म के लोग धूमधाम से मनाते हैं।

सिखों के दसवें आध्यात्मिक गुरु गोविंद सिंह वीरता, शौर्य, साहस, त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति थे। वे एक महान कर्म-प्रणेता, अद्वितीय धर्मरक्षक, निर्भय योद्धा, दार्शनिक एवं कवि थे। उनमें ज्ञान, त्याग, बलिदान, भक्ति एवं शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। राष्ट्रधर्म की रक्षा, मानव समाज के उत्थान एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्पित थे।

गुरु गोविंद सिंह का जन्म पटना साहिब में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु तेग बहादुर सिंह और माता का नाम गुजरी था। उनके पिता सिखों के नवें गुरु थे। गुरु गोविंद सिंह का बचपन का नाम गोविंद राय था। जब उनके पिता गुरु तेग बहादुर सिंह ने इस्लाम धर्म में परिवर्तित होने से इनकार कर दिया तब नवम्बर 1675 में औरंगजेब ने उनका सर कलम कर शहीद कर दिया तब मात्र 9 वर्ष के गुरु गोविंद सिंह को औपचारिक रूप से सिखों के दसवें गुरु के रूप में 11 नवंबर 1675 ईस्वी में गादी पर बैठाया गया।

गोविंद सिंह ने 1699 ईस्वी में वैशाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की। यही नहीं उन्होंने सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया था। उन्होंने खालसा पंथ की रक्षा के लिए मुगलों और उनके सहयोगियों से चौदह युद्ध लड़े थे। उन्होंने अपने धर्म की रक्षा के लिए मुगलों से लड़ते हुए पूरे परिवार का बलिदान दिया। उनके दो पुत्रों बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह ने चमकौर के युद्ध में शहादत दी। वहीं अपने दो पुत्रों बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहन्द के नवाब ने जिंदा दीवारों में चुनवा दिया। गुरु गोविंद सिंह का 7 अक्टूबर 1708 ईस्वी में स्वर्गारोहण हुआ। इससे पहले उन्होंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब ही अब से सिखों के स्थाई गुरु होंगे।

गुरु गोविंद सिंह ने जीवन जीने के पांच सिद्धांत दिए हैं जिन्हें पंच ककार कहा जाता है। पांच चीजों को गुरु गोविंद सिंह के सिद्धांतों के अनुसार सभी खालसा सिखों को धारण करना होता है। गुरु गोविंद सिंह ने सिखों के लिए केश, कड़ा, कृपाण, कंघा, और कच्छा। इसके बिना खालसा वेश पूर्ण नहीं माना जाता है। केश सबसे पहले आते हैं। उन्होंने हर सिख के लिए कृपाण या श्री साहिब धारण करना अनिवार्य कर दिया। वहीं गुरु गोविंद सिंह ने ही खालसा वाणी दी, जिसे वाहेगुरुजी का खालसा, वाहेगुरुजी की फतेह कहा गया।

गुरु गोविंद सिंह बेहद निडर और बहादुर योद्धा थे। उनके बारे में लिखा गया है- सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियों सों मैं बाज तड़ऊं, तबे गोविंद सिंह नाम कहाऊं। गुरु गोविंद सिंह की गिनती महान लेखकों और रचनाकारों में होती है। उन्होंने जाप साहिब, अकाल उस्तत, विचित्र नाटक चंडी चरित्र, शास्त्र नाम माला, अथ पंख्या चरित्र लिख्यते, जफरनामा और खालसा महिमा जैसी रचनाएं रची। विचित्र नाटक उनकी आत्मकथा माना जाता है। गुरु गोविंद सिंह की कृतियों के संकलन का नाम दसम ग्रंथ है।

गुरु गोविंद सिंह ने कहा था कि जहां पांच सिख एकत्र होंगे वहीं वे निवास करेंगे। गुरु गोविंद सिंह ने समाज में फैले भेदभाव को समाप्त कर उनमें आत्म सम्मान तथा निडर रहने की भावना पैदा की। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति को डरना नहीं चाहिए और न ही उसे दूसरों को डराना चाहिए। उन्होंने कहा कि मै काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन। गुरु गोविंद सिंह का जीवन दर्शन था कि धर्म का मार्ग सत्य का मार्ग है। उनका मानना था कि गुरु के बिना किसी भी व्यक्ति को ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है। प्रत्येक मनुष्य को जरूरतमंद लोगों की मदद करनी चाहिए।

यदि आज भारत में सद्भाव, भाईचारा एवं धर्म स्थापित है तो उसका पूरा श्रेय गुरु गोविंद सिंह को जाता है। इस देश के साधु संत और महात्मा हमेशा अपने मठों में या मंदिरों में ही रहे। वे अपनी पूजा-पाठ और परंपराओं में ही उलझे रहे, समाज के लिए कुछ नहीं किया। जो लोग समाज सेवा करते थे और सच्चे सिपाही थे वह धर्म से कोसों दूर थे, उनके अंदर कोई साधुत्व नहीं था। तब गुरु गोविंद सिंह ने कहा था– मन में साधु बनो, व्यवहार में मधुरता लाओ और भुजाओं में सैनिक की वीरता लाओ। तब उन्होंने संत सिपाही का नारा दिया और वे स्वयं सबसे पहले संत सिपाही बने इसीलिए जब भी कोई व्यक्ति गुरु गोविंद सिंह का नाम सुनता है तो उनकी संत-सिपाही की छवि सामने आ जाती है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

पटवार भवन में परिवार सहित रह रहा कब्जाधारी

उनियारा, (निसं)। राजस्व विभाग तथा उच्चाधिकारियों की लापरवाही के चलते हुए नगरफोर्ट तहसील मुख्यालय सहित क्षेत्र की सिवायचक भूमि, चारागाह भूमि सहित सरकारी भूमि पर अतिक्रमण होना अब आम बात हो गई है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद भी तहसील के उच्चाधिकारी तथा पटवारी अपना ध्यान देना मुनासिब नहीं समझ रहे हैं। ऐसा ही एक बड़ा मामला सामने आया कि रानीपुरा ग्राम पंचायत के विजयनगर (कारोलाई) में लाखों रुपए की लागत से बने पटवार भवन पर गांव के एक व्यक्ति ने 20 साल से कब्जा कर अपना निज आवास बना रखा है। जिसकी जानकारी तहसीलदार, पटवारी सहित अन्य को होने पर भी मामला ज्यों का त्यों ही बना हुआ है। हद तो तब हो गई जब कब्जाधारी व्यक्ति भवन में अपने परिवार सहित कब्जा कर रहने लगे है। वहीं ग्रामीणों का कहना है कि सरकार ने 20 साल पहले पटवार भवन का निर्माण करवाया था। जिसमें निर्माण के बाद से एक बार भी पटवारी पटवार भवन में नहीं बैठा है। सबसे बड़ी बात यह देखने में मिल रही है कि आमजनों को अतिक्रमण हटवा कर राहत पहुंचाने वाला विभाग ही आज अपनी सम्पत्ति को अतिक्रमण से मुक्त करने में बौना साबित हो रहा है। जिससे सरकार को लाखों रूपये की चपत लगने की संभावना बनी हुई है।

मालपुरा में 138वां स्थापना दिवस मनाना भूले कांग्रेसी

- **ब्लॉक कार्यालय के नहीं खुले ताले**
- **सोशल मीडिया पर भी नहीं दिखी कांग्रेस नेताओं की पोस्ट**

मालपुरा, (निसं)। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के 138वें स्थापना दिवस पर देश-प्रदेश व जिले सहित ब्लॉक स्तर तक कार्यालयों में झण्डा लहराने एवं स्थापना दिवस मनाए जाने के संगठन के आदेशों के बावजूद मालपुरा में ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय पर ताले लटके रहे। कांग्रेस संगठन की ओर से सम्पूर्ण ब्लॉक में कही कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं किया गया। मालपुरा विधानसभा क्षेत्र से भी दर्जनों कांग्रेस के नेता भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हो राहुल गांधी के साथ फोटो खिंचवा सोशल मीडिया पर राहुल को मालपुरा विधानसभा क्षेत्र के राजनैतिक हालातों से परिचित करवाया। 2023 में मालपुरा विस. में कांग्रेस का विधायक बनाने के दावे किये जा रहे हैं।

मालपुरा नगरपालिका में कांग्रेस का बोर्ड होने व टोंक जिला मुख्यालय से कांग्रेस विधायक होने के बावजूद मालपुरा में पार्टी के स्थापना दिवस पर किसी प्रकार का कोई आयोजन होना तो दूर सोशल मीडिया पर भी कांग्रेस के सफेद पोश नेताओं द्वारा एक भी बधाई संदेश तक पोस्ट नहीं किया गया।

आखिर कैसे मजबूत होगी कांग्रेस, आखिर कैसे मालपुरा विधानसभा में जीतेगी कांग्रेस, प्रदेश में कैसे बनेगी कांग्रेस की सरकार यह सब सवाल मालपुरा शहर की चौपाटियों पर चर्चा का विषय बने हुए हैं। मामले को लेकर कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रामदेव बैरवा से पूछा गया तो ब्लॉक अध्यक्ष ने कहा कि उनके पास संगठन के कोई निर्देश नहीं हैं। इसीलिए कोई कार्यक्रम नहीं मनाया गया। ब्लॉक अध्यक्ष के इन बयानों में कितनी सच्चाई है यह तो जिलाध्यक्ष अथवा पीसीसी ही जाने।

शिल्पग्राम उत्सव में पं. विश्वमोहन भट्ट तथा अनवर खां मांगणियार ने प्रस्तुति दी

'केसरिया बालम' सुना कर राजस्थान की अनूठी संस्कृति से परिचित करवाया

उदयपुर, (कासं)। शिल्पग्राम उत्सव में बुधवार को मुक्ताकाशी रंगमंच पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तथा ग्रैमी अवार्ड से सम्मानित पद्मभूषण पं. विश्वमोहन भट्ट तथा लोक गायकी के सिद्धकंठी पद्मश्री अनवर खां मांगणियार द्वारा मोहन वीणा वादन और गायन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं उत्सव में ही शिल्प वस्तुओं की खरीददारी का सिलसिला जोरों पर रहा। नवें दिन 'लोक धार' में लोक कला प्रस्तुतियां होगी।

उत्सव के आठवें दिन हाट बाजार में कलात्मक वस्तुओं की खरीददारी का सिलसिला मंगलवार की तरह परवान पर रहा । दिन में बंजारा मंच पर कालबेलिया, चकरी, कच्छी घोड़ी, भपंग वादक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। शिल्पग्राम उत्सव पर फोटो प्रतियोगिता हुई जिसकी प्रविष्ठियां 31 दिसम्बर तक ली जायेंगी।

लगभग 85 देशों में मोहन वीणा तथा विश्व वीणा से लोगों को मंत्रमुग्ध करने वाले प. भट्ट के साथ सबसे पहले अनवर खां की चिरपिरिचित आवाज में 'केसरिया बालम' सुना कर राजस्थान की अनूठी संस्कृति परिचित करवाया। इसके बाद 'झिरमिर बरसे मेघ' से वर्षा ऋतु में बूदों की छम छम का आभास अपने संगीत से करवाया। इसके बाद राग किरवानी में निबद्ध लोक गीत 'हिचकी' में यादों का सुरीला अहसास करवाया।

कार्यक्रम में भजन 'पायो जी मैने राम रतन धन पायो' की प्रस्तुति पर दर्शक झूम उठे तथा लोगों ने करतल ध्वनि से दोनों विभूतियों का अभिवादन किया। इसके बाद राग बागेश्री में रचित तथा बाबा रामदेव की आराधना में कामड़ जाति के लोगों द्वारा गाया जाने वाला भजन 'हेलो म्हारो सुणो..' सुरीली पेशकश बन सकी।

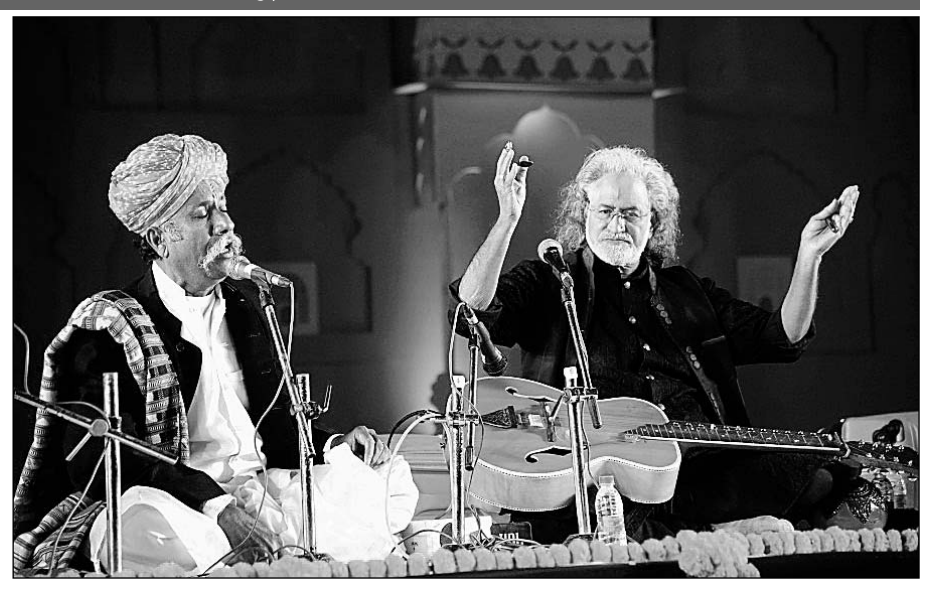

शिल्पग्राम में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पं. विश्वमोहन भट्ट व अनवर खां मांगणियार ने प्रस्तुति दी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 29 दिसम्बर, 2022

पौष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र दिन 11:44 तक, व्यतिपात योग दिन 11:45 तक, गर करण प्रातः 8:01 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा सांय 7:18 से शुक्रवार प्रातः 6:56 तक रहेगी। बुध वक्री दिन 3:00 पर होगा। शुक्र मकर राशि में सांय 4:03 पर प्रवेश करेगा। आज गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, व्यतिपात पुण्य और पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:36 तक, चर 11:11 से 12:28 तक, लाभ-अमृत 12:28 से 3:03 तक, शुभ 4:21 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:39

मेष

पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। आज वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क

धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।